

(2)

118



न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

पुनरीक्षण प्रकरण क्रमांक 1072X/2014 जिला-विदिशा

श्री. भवरीबाई देवी देवी
9-2-2014

भवरीबाई पुत्री श्री रूपसिंह राजपूत,
निवासी - ग्राम बीलखेडी, तहसील
शमशाबाद, जिला विदिशा (म.प्र.)
..... आवेदिका

विरुद्ध

इमरतसिंह पुत्र श्री मानसिंह राजपूत,
निवासी - ग्राम बीलखेडी, तहसील
शमशाबाद, जिला विदिशा (म.प्र.)
..... अनावेदक

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी, शमशाबाद द्वारा प्रकरण क्रमांक 9/2013-14
अपील में पारित आदेश दिनांक 25.03.2014 के विरुद्ध मध्य प्रदेश भू-राजस्व
संहिता की धारा 50 के अधीन पुनरीक्षण।

माननीय महोदय,

आवेदिका की ओर से यह पुनरीक्षण निम्न प्रकार प्रस्तुत है :-

मामले के संक्षिप्त तथ्य:-

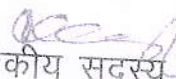
- यहकि, अनावेदक इमरतसिंह द्वारा तहसीलदार शमशाबाद के समक्ष आवेदन पत्र धारा 115-116 भू-राजस्व संहिता के अन्तर्गत इस आशय से प्रस्तुत किया कि ग्राम बीलखेडी में स्थित सर्वे क्रमांक 315 रकवा 0.040 है, सर्वे क्रमांक 321 रकवा 0.020 है, सर्वे क्रमांक 403/2 रकवा 0.508 है, सर्वे क्रमांक 542 रकवा 0.340 है, सर्वे क्रमांक 411 रकवा 0.950 है, कुल किता 5 कुल रकवा 1.858 हैक्टेयर है, जो पैत्रिक कृषि भूमियाँ हैं, जो उसे आपसी बंटवारे में प्राप्त हुयी थी; उक्त कृषि खाते का सर्वे क्रमांक 411 रकवा 0.950 हैक्टेयर सहवन त्रुटिवश शासकीय अभिलेख में आवेदिका भवरीबाई के नाम अवैध रूप से अंकित हो गयी है। उक्त गलत एवं अवैध प्रविष्टी का शासकीय अभिलेख में सुधार किया जाकर उक्त प्रविष्टी पर अनावेदक का नाम शासकीय अभिलेख में विधि अनुरूप अंकित किया जाये।
- यहकि, अनावेदक के उक्त आवेदनपत्र तहसीलदार, शमशाबाद द्वारा प्रकरण क्रमांक 20/अ-6/2012-13 पंजीबद्ध कर कार्यवाही प्रारम्भ की गयी, जिसमें आवेदिका की ओर से अपना विधिवत जबाव प्रस्तुत किया एवं बताया कि विवादित भूमि सर्वे क्रमांक 411 रकवा 0.950 हैक्टेयर आवेदिका के स्वत्व,

3-4-2014

आवेदक अधिवक्ता श्री के०के०द्विवेदी, उपस्थित । उन्हें ग्राह्यता पर सूना ।

2- आवेदक अधिवक्ता द्वारा ग्राह्यता पर प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया तथा अधीनस्थ अनुविभागीय अधिकारी शमशाबाद जिला विदिशा के प्रकरण क्रमांक 9/2013-14 अपील में पारित आदेश दिनांक 25-3-2014 की सत्यप्रतिलिपि का अवलोकन किया गया जिसके विरुद्ध आवेदक द्वारा यह निगरानी इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की गई है ।

3- अनुविभागीय अधिकारी न्यायालय द्वारा आवेदक की आपत्ति कि उनके न्यायालय में अनावेदक द्वारा प्रस्तुत अपील अवधि बाह्य थी, के बिन्दु पर कोई निराकरण नहीं करते हुये प्रकरण अंतिम तर्क हेतु नियत किया गया । अनुविभागीय अधिकारी को प्रथमतः अपील के अवधि बाह्य के बिन्दु पर निराकरण करना चाडिये था जो उनके द्वारा नहीं किया गया है । अतः अनुविभागीय अधिकारी को इन निर्देशों के साथ प्रकरण का अंतिम निराकरण किया जाता है कि समय सीमा के बिन्दु पर बोलता हुआ आदेश पारित करें ।


प्रशासकीय सदस्य